

॥ हरितालिका तीज व्रत, कथा, पूजन, उद्यापन विधि ॥

विषय अनुक्रमाणिका

1. हरितालिका	02
2. हरितालिका तीज के शास्त्रीय मत्	03
3. हरितालिका तीज नियम एवं पूजन विधि	04
4. हरितालिका तीज पूजन सामग्री	05
5. हरितालिका तीज पूजन	06
6. गणेश गौरी पूजनम्	10
7. कलश (वरुण) पूजनम्	11
8. सखी सह पार्वती शिव पूजनम्	13
9. हरितालिका तीज व्रत कथा	22
10. आरती – शिव जी की	24
11. आरती – पार्वती जी की	25
12. हरितालिका व्रत उद्यापन विधि	29

॥ हरितालिका ॥

हरितालिका (भविष्योत्तर-पुराण) - भाद्रस्य कजली कृष्णा शुक्ला च हरि-तालिका । के अनुसार भाद्र शुक्ल तृतीया को ' हरितालिका ' का व्रत किया जाता है । यह आमतौर पर अगस्त - सितम्बर के महीने में ही आती है । इसे गौरी-तृतीया, हरि-काली, हस्त-गौरी और कोटीश्वरी व्रत भी कहते हैं । इस दिन महिलाएं श्रीगणेश, भगवान शिव व माता पार्वती की रेत के द्वारा बनाई गई अस्थाई मूर्तियों को पूजती हैं व सुखी वैवाहिक जीवन तथा संतान की प्राप्ति के लिए प्रार्थना करती हैं ।

उत्तरप्रदेश, बिहार, मध्यप्रदेश, छत्तीसगढ़, महाराष्ट्र में मनाया जाने वाला यह त्योहार करवाचौथ से भी कठिन माना जाता है क्योंकि जहां करवाचौथ में चांद देखने के बाद व्रत तोड़ दिया जाता है वहीं इस व्रत में पूरे दिन निर्जल व्रत किया जाता है और अगले दिन पूजन के पश्चात ही व्रत तोड़ा जाता है ।

हरितालिका यह भाद्रपद शुक्ल तृतीया, हस्त नक्षत्र में होता है । यदि तृतीया तिथि में सूर्योदय होकर तृतीया तिथि के बाद चतुर्थी तिथि भी हो जाय और हस्त नक्षत्र में नहीं भी हो तो तृतीया तिथि और चतुर्थी तिथि के योग में व्रत करेंगे लेकिन द्वितीय तिथि और तृतीया तिथि के योग में व्रत नहीं करेंगे।

हरितालिका तीज का शाब्दिक अर्थ क्रमशः हरत अर्थात् अपहरण, आलिका का अर्थ स्त्रीमित्र (सहेली) तथा तीज-तृतीया तिथि से लिया गया है ।

॥ शास्त्रीय मत् ॥

- चतुर्थी संहिता या तु सा तृतीया फलप्रदा ।
अवैधव्यकरा-स्त्रीणां पुत्र-पौत्र-प्रवर्धिनी ॥ निर्णय सिन्धु-197
अर्थ - जो तृतीया चतुर्थी के साथ होती है वह फलदायिनी है जो कि स्त्रियों को सौभाग्य देने वाला एवं पुत्र-पौत्र की वृद्धि करने वाला होता है ।
- द्वितीया शेष संयुक्तां या करोति विमोहिता ।
सा वैधव्यमवाप्नोति प्रवदन्ति मनीषिणः ॥ निर्णय सिन्धु-197
अर्थ - द्वितीया के साथ उपरान्त जो तृतीया में जो स्त्री विमोहित होकर अर्थात् बहकावे में आकर व्रत करती है वह स्त्री वैधव्य को प्राप्त होती है ।
- भाद्रपद शुक्ल तृतीयायां हरितालिका व्रतम् । धर्म सिन्धु-59
भाद्रपद-शुक्ल तृतीया में हरितालिका व्रत होता है ।
- मुहूर्त मात्रा ततो न्यूनापि परा ग्राह्या । धर्मसिन्धु-59
इसको मुहूर्तमात्र या उससे भी कम हो, तो भी चतुर्थी-विद्धा ग्रहण करना चाहिये ।
- यदा क्षयवशात् परदिने नास्ति तदा द्वितीयायुतापि ग्राह्या । निर्णय धर्मसिन्धु
यदि तिथि का क्षय हो, तो द्वितीया-विद्धा भी ग्रहण करना योग्य है ।
- मुहूर्त मात्रा सत्वेऽपि दिने गौरी व्रतं परे । निर्णय सिन्धु-197
यदि दो तीज होवे तो दूसरे दिन मुहूर्त मात्र दो घड़ी अर्थात् ४८ मिनट हो तो भी दूसरे दिन को ही करे

❖ हरितालिका तीज नियम

- हरितालिका व्रत निर्जला किया जाता है, अर्थात पूरा दिन एवं रात अगले सूर्योदय तक जल ग्रहण नहीं किया जाता।
- हरितालिका व्रत कुंवारी कन्या, सौभाग्यवती महिलाओं द्वारा किया जाता है। इसे विधवा महिलायें भी कर सकती हैं।
- हरितालिका व्रत का नियम है कि इसे एक बार प्रारंभ करने के बाद छोड़ा नहीं जा सकता। इसे प्रति वर्ष पुरे नियमों के साथ किया जाता है।
- यदि व्रती महिला गंभीर रोगी हालात में हो तो उसके बदले में दूसरी महिला या उसका पति भी इस व्रत को कर सकता है।
- हरितालिका व्रत के दिन पूरी रात महिलायें एकत्र होकर नाच गाना एवम भजन करती हैं।
- इस व्रत पर सौभाग्यवती स्त्रियां नए लाल वस्त्र पहनकर, मेंहदी लगाकर, सोलह श्रृंगार करती हैं।
- सामान्यतह महिलायें यह हरितालिका पूजन मंदिर में करती हैं।

❖ हरितालिका तीज पूजन विधी

- हरितालिका पूजन प्रदोष काल में किया जाता है।
- हरितालिका पूजन के लिए शिव, पार्वती एवं गणेश जी की प्रतिमा बालू रेत अथवा काली मिट्टी से अपने हाथों से बनाई जाती हैं।
- कलश, गणेश, शिव, माता गौरी की पूजा की जाती है। एवं घी, तिल आदि से आहुति दें।
- माता गौरी को सम्पूर्ण श्रृंगार चढ़ाया जाता है।
- इसके बाद हरितालिका की कथा पढ़ी जाती है। एवं सभी मिलकर आरती करें।
- सुबह आखरी पूजा के बाद माता गौरा को जो सिंदूर चढ़ाया जाता है। उस सिंदूर से सुहागन स्त्री सुहाग लेती हैं।
- ककड़ी एवं हलवे का भोग लगाया जाता है। उसी ककड़ी को खाकर व्रत का विसर्जन करे।
- इस व्रत के व्रती को शयन का निषेध है इसके लिए उसे भजन कीर्तन के साथ रात्रि जागरण करना चाहिये।
- प्रातःकाल स्नान के पश्चात् अष्ट-युग्म या षोडश-युग्म (जोड़ा-जोड़ी) को भोजन कराके १६ सौभाग्य द्रव्य (सुहाग-पीटारा), वस्त्र, खाद्य सामग्री, फल, मिठाई दान करना चाहिए।
- मान्यता है कि जो सभी पापों और सांसारिक तापों को हरने वाले हरितालिका व्रत को विधि पूर्वक करता है, उसके सौभाग्य की रक्षा स्वयं भगवान शिव करते हैं।

❖ हरतालिका पूजन सामग्री

- अबिर, गुलाल, कुमकुम, हल्दी, सिन्दूर, अष्टगंध १० ग्राम
- कलश, नारियल २ नग
- चावल (बासमती-अख्खा) १.२५० किलो
- कपड़ा - लाल, सफेद २ मिटर
- अगरबत्ती १ बंडल
- कपूर १०० ग्राम
- माचिस १ पाकिट
- कापुस ५ रु
- घी १ किलो
- ईत्र १ सीसी
- रक्छासुत्र (मौली) २ बंडल
- जनेऊ ५ नग
- लवांग, ईलायची ५ ग्राम
- सुपारि (बडी) ३५ नग
- पञ्चमेवा ५०० ग्राम
- पंचामृत - दुध, दही, घी, सक्कर, मधु
- केले का खम्बा ४ नग
- फल ५ प्रकार
- पान २५ नग
- फुल (छुट्टा मिक्स) १ किलो
- हार (छोटा) २ नग
- बैल पत्र, शमी पत्र, धतूरे का फल एवं फूल, अकाँव का फूल, तुलसी, मंजरी
- फुलेरा विशेष प्रकार से फूलों से सजा होता
- गीली काली मिट्टी अथवा बालू रेत
- माता गौरी के लिए १६ श्रृंगार – मांगटीका, सिंदूर, बिंदी, काजल, नथनी, कान के गहने, हार, गजरा, बाजूबंद, चूड़ी, अंगूठी, मेहँदी, कमरबंद, पायल, बिछिया, कुमकुम, कंघी, माहौर आदि मान्यतानुसार एकत्र की जाती हैं।

॥ हरितालिका पूजन विधी ॥

- पवित्रकरणम् ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोपि वा ।
यः स्मरेत् पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः ॥
- आचम्य ॐ केशवाय नमः, ॐ माधवाय नमः, ॐ नारायणाय नमः आचमन करें
ॐ हृषीकेशाय नमः हाथ धो लें
- आसन शुद्धि ॐ पृथ्वी त्वया धृता लोका देवि त्वं विष्णुना धृता ।
त्वं च धारय मां देवि पवित्रं कुरु चासनम् ॥
- पवित्र धारणम् ॐ पवित्रे स्थो वैष्णव्यौ सवितुर्वः प्रसव उत्पुनाम्यच्छिद्रेण पवित्रेण
सूर्यस्य रश्मिभिः। तस्य ते पवित्रपते पवित्र पूतस्य यत्कामः पूने तच्छकेयम् ॥
- यज्ञोपवित ॐ यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं प्रजा पतेर्यत सहजं पुरुस्तात।
आयुष्यं मग्रंय प्रतिमुन्च शुभ्रं यज्ञोपवितम बलमस्तु तेजः ॥
- शिखाबन्धन ॐ चिद्रूपिणि महामाये दिव्यतेजः समन्विते ।
तिष्ठ देवि शिखामध्ये तेजोवृद्धिं कुरुष्व मे ॥
- तिलक / चन्दन चन्दनस्य महत्पुण्यम् पवित्रं पापनाशनम् ।
आपदां हरते नित्यम् लक्ष्मी तिष्ठ सर्वदा ॥
- रक्षाबन्धनम् ॐ व्रतेन दीक्षामाप्नोति दीक्षयाऽऽप्नोति दक्षिणाम् ।
दक्षिणा श्रद्धामाप्नोति श्रद्धया सत्यमाप्यते ॥
- स्वस्ति-वाचन आ नो भद्राः क्रतवो यन्तु विश्वतोऽदब्धासो अपरीतास उद्भिदः ।
देवा नो यथा सदमिद् वृधे असन्नप्रायुवो रक्षितारो दिवे दिवे ॥ १ ॥
■ देवानां भद्रा सुमतिर्ऋजूयतान्देवानां ७ राति रभिनो निवर्तताम् ।
देवानां ७ सख्यमुपसेदिमा वयन्देवान आयुः प्रतिरन्तु जीवसे ॥ २ ॥
■ तान्पूर्वया निविदा हूमहेवयम् भगम् मित्रमदितिन् दक्षमस्त्रिधम् ।
अर्यमणं वरुण ७ सोम मश्विना सरस्वती नः सुभगा मयस्करत् ॥ ३ ॥
■ तन्नो वातो मयो भुवातु भेषजन् तन्माता पृथिवी तत्पिता द्यौः ।
तद् ग्रावाणः सोमसुतो मयो भुवस्तदश्विना शृणुतन् धिषण्या युवम् ॥ ४ ॥
■ तमीशानन् जगतस् तस्थुषस्पतिन् धियज्जिन्वमवसे हूमहे वयम् ।
पूषा नो यथा वेदसामसद् वृधे रक्षिता पायुरदब्धः स्वस्तये ॥ ५ ॥

- स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषा विश्वेवेदाः ।
स्वस्ति नस्तार्क्ष्यो अरिष्टनेमिः स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु ॥ ६ ॥
- पृषदश्चा मरुतः पृश्निमातरः शुभं व्यावानो विदथेषु जग्मयः ।
अग्निजिह्वा मनवः सूरचक्षसो विश्वेनो देवा अवसा गमन्निह ॥ ७ ॥
- भद्रं कर्णेभिः शृणुयाम देवा भद्रं पश्ये माक्षभिर्यजत्राः ।
स्थिरै रङ्गैस्तुष्टुवा ७ सस्तनूभिर् व्यशेमहि देवहितं यदायुः ॥ ८ ॥
- शतमिन्नु शरदो अन्ति देवा यत्रा नश्चक्रा जरसन् तनूनाम् ।
पुत्रासो यत्र पितरो भवन्ति मानो मध्यारी रिषतायुर्गन्तोः ॥ ९ ॥
- अदितिर्द्यौ रदितिरन्त रिक्षमदितिर् माता सपिता सपुत्रः ।
विश्वे देवा अदितिः पञ्चजना अदितिर् जातमदितिर् जनित्वम् ॥ १० ॥
- द्यौः शान्तिरन्तरिक्ष ७ शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः
शान्तिः। वनस्पतयः शान्तिर्विश्वे देवाः शान्तिर्ब्रह्मा शान्तिः
सर्व ७ शान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सामा शान्तिरेधि ॥ ११ ॥
- यतो यतः समीहसे ततो नो अभयं कुरु ।
शन्नः कुरु प्रजाभ्योऽभयन्नः पशुभ्यः ॥ १२ ॥

- | | | |
|------------------------------------|--------------------------------|--------------------------------------|
| 1. ॐ श्रीमन महागणाधी पतये
नमः । | 5. स्थान देवताभ्यो नमः । | 10. शची पुरंदाराभ्याम नमः । |
| 2. इष्ट देवताभ्यो नमः । | 6. वास्तु देवताभ्यो नमः । | 11. मातृ पितृ चरण कमलेभ्यो नमः । |
| 3. कुल देवताभ्यो नमः । | 7. वाणी हिरण्यगर्भाभ्याम नमः । | 12. सर्वेभ्यो देवेभ्यो नमः । |
| 4. ग्राम देवताभ्यो नमः । | 8. लक्ष्मी नारायणाभ्याम नमः । | 13. सर्वेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो नमः । |
| | 9. उमा महेश्वराभ्याम नमः । | 14. एतत् कर्म प्रधान देवताभ्यो नमः । |

- सुमुखश्चै कदंतश्च कपिलो गजकर्णकः ।
लम्बोदरश्च विकटो विघ्ननाशो विनायकः ॥ १ ॥
- धुम्रकेतुर् गणाध्यक्षो भालचन्द्रो गजाननः ।
द्वादशैतानि नामानि यः पठेच्छृणुयादपि ॥ २ ॥
- विद्यारंभे विवाहे च प्रवेशे निर्गमे तथा ।
संग्रामे संकटे चैव विघ्नस्तस्य न जायते ॥ ३ ॥
- शुक्लाम्बर धरम देवं शशि वर्णं चतुर्भुजम् ।
प्रसन्नवदनं ध्यायेत् सर्व विघ्नोपशान्तये ॥ ४ ॥

- अभीप्सितार्थ सिद्ध्यर्थ पूजितो यः सुरासुरैः ।
सर्वविघ्न हरस्तस्मै गणाधिपतये नमः ॥ ५ ॥
- सर्वमंगल मांगल्ये शिवे सर्वार्थ साधिके ।
शरण्ये त्र्यम्बके गौरी नारायणी नमोस्तु ते ॥ ६ ॥
- सर्वदा सर्व कार्येषु नास्ति तेषाममंगलम् ।
येषां हृदयस्थो भगवान् मंगलायतनो हरीः ॥ ७ ॥
- तदेव लग्नं सुदिनं तदेव ताराबलं चंद्रबलं तदेव ।
विद्याबलं दैवबलम् तदेव लक्ष्मीपते तेन्द्री युगं स्मरामि ॥ ८ ॥
- लाभस्तेषां जयस्तेषां कुतस्तेषां पराजयः ।
येषामिन्दीवरश्यामो हृदयस्थो जनार्दनः ॥ ९ ॥
- यत्र योगेश्वरः कृष्णो यत्र पार्थो धनुर्धरः ।
तत्र श्रीर्विजयो भूतिर्ध्रुवा नीतिर्मम ॥ १० ॥
- अनन्याश्चिन्तयन्तो मां ये जनाः पर्युपास्ते ।
तेषां नित्याभि युक्तानां योगक्षेमं वहाम्यहम् ॥ ११ ॥
- स्मृतेः सकल कल्याणं भाजनं यत्र जायते ।
पुरुषं तमजं नित्यं ब्रजामि शरणं हरिम् ॥ १२ ॥
- सर्वेष्वारम्भकार्येषु त्रयस्त्रि भुवनेश्वराः ।
देवा दिशन्तु नः सिद्धिं ब्रह्मेशान जनार्दनः ॥ १३ ॥
- विश्वेशं माधवं दुण्डिं दण्डपाणिं च भैरवम् ।
वन्द काशीं गुहां गंगां भवनीं मणिकर्णिकाम् ॥ १४ ॥
- वक्रतुंड महाकाय सूर्य कोटि समप्रभ ।
निर्विघ्नं कुरुमे देव सर्व कार्येषु सर्वदा ॥ १५ ॥

- **संकल्प** ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः, ॐ श्रीमद् भगवतो महापुरुषस्य विष्णोराज्ञया प्रवर्तमानस्य अद्य ब्रह्मणोऽह्नि द्वितीये परार्धे श्री श्वेतवाराहकल्पे वैवस्वतमन्वन्तरे, अष्टाविंशतितमे युगे कलियुगे, कलिप्रथम चरणे भूर्लोके जम्बुद्वीपे भारतवर्षे भरतखण्डे आर्यावर्तैकदेशे अमुकक्षेत्रे, अमुकदेशे, अमुकनाम्नि नगरे, विक्रमशके, बौद्धावतारे, अमुक नाम संवत्सरे, श्रीसूर्य अमुकायने, अमुक ऋतौ, मासानां मासोत्तमे मासे भाद्रपद मासे, शुक्ल पक्षे, तृतीयां तिथौ, अमुक वासरे, अमुक नक्षत्रे, अमुक योगे, अमुक करणे, अमुक राशि स्थिते चन्द्रे, अमुक राशि स्थिते सूर्ये, अमुक राशि स्थिते देवगुरौ, शेषेषु ग्रहेषु यथा यथा

राशि स्थान स्थितेषु सत्सु एवं ग्रह गुणगण विशेषण विशिष्टायां शुभ पुण्य तिथौ अमुक गोत्रः, अमुक शर्मा (वर्मा, गुप्तः, दासः), अहं मम आत्मनः श्रुति-स्मृति-पूराणोक्तफल प्राप्त्यर्थं कायिक, वाचिक, मानसिक सांसर्गिक चतुर्विध पातक दुरितक्षयार्थं, धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष चतुर्विध पूषार्थ प्राप्त्यर्थं श्री परमेश्वर प्रीत्यर्थं च हरितालिका देवी प्रसादेन मम इह जन्मनि पापक्षय पूर्वक अखंडित सौभाग्य पुत्र पौत्र धन धान्यादि विविधैश्वर्य प्राप्त्यर्थं उमामहेश्वर देवता प्रीत्यर्थं प्रतिवार्षिक विहितं हरितालिका व्रतांगत्वेन यथाज्ञानेन यथामिलितोपचारैः उमामहेश्वर पूजनम् अहं करिष्ये ।

पुनर्जलं गृहीत्वा - तत्रादौ निर्विघ्नता सिद्ध्यर्थं गणेश, अम्बिकयोः पूजनं करिष्ये ।

- पृथ्वी ध्यानम् ॐ पृथिव त्वया धृता लोका देवि त्वं विष्णुना धृता ।
त्वं च धारय मां देवि पवित्रं कुरु चासनम् ॥
- रक्षा विधानम् अप सर्पन्तु ते भूता ये भूता भूमि संस्थिताः ।
ये भूता विघ्नकर्तारस्ते नश्यन्तु शिवाज्ञया ॥
■ अपक्रामन्तु भूतानि पिशाचाः सर्वतो दिशम् ।
सर्वेषाम विरोधेन पूजा कर्म समारभे ॥
- दीप स्थापनम् शुभं करोतु कल्याणं आरोग्यं सुख सम्पदाम् ।
मम बुद्धि विकाशाय दीपज्योतिर्नमोस्तुते ॥
■ दीपज्योतिः परब्रह्मः दीपज्योतिः जनार्दनः ।
दीपोहरतिमे पापं दीपज्योतिर् नामोस्तुते ॥
- सूर्य नमस्कार ॐ आकृष्णेन रजसा वर्तमानो निवेशयन्नमृतम्मर्त्यञ्च ।
हिरण्येन सविता रथेना देवो याति भुवनानि पश्यन् ॥
- शंख पूजनम् ॐ पांचजन्याय विद्महे पावमानाय धीमहि ।
तन्नो शंखः प्रचोदयात् ॥
- घंटी पूजनम् आगमार्थं तु देवानां गमनार्थं तु रक्षसाम् ।
घण्टा नाद प्रकुर्वीत पश्चात् घण्टां प्रपूजयेत् ॥

॥ गणेश अम्बिका पूजनम् ॥

- **गणेश ध्यानम्**

ॐ गणानां त्वा गणपति ॐ हवामहे, प्रियाणान्त्वा प्रियपति ॐ हवामहे, निधीनान्त्वा निधिपति ॐ हवामहे, वसोः मम आहमजानि गर्भधम् मात्वमजासि गर्भधम् ॥

 1. गजाननम् भूत गणादि सेवितं कपित्थ जम्बू फलचारु भक्षणम् ।
उमासुतं शोक विनाश कारकं नमामि विघ्नेश्वरपादपंकजम् ॥
 - ॐ भूर्भुवः स्वः सिद्धि बुद्धि सहिताय गणपतये नमः ।
गणपतिम् आवाह्यामि स्थापयामि पूजयामि ।
- **गौरी ध्यानम्**

नमो देव्यै महादेव्यै शिवायै सततं नमः ।
नमः प्रकृत्यै भद्रायै नियताः प्रणताः स्म ताम् ॥

 - ॐ हेमद्रितनायां देवीं वरदां शंकरप्रियाम् ।
लम्बोदरस्य जननीं गौरीं आवाह्याम्यहम् ॥
 - ॐ भूर्भुवः स्वः गौर्यै नमः । गौरीम् आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि ।
 - नीचे दिये हुए मंत्रो के द्वारा पंचोपचार या षोडशोपचार पूजन कर दें ।
- **विशेषार्घ्य**

एक ताम्रपात्र में जल, चन्दन, अक्षत, फल, फूल, दूर्वा और दक्षिणा रखलें ।

 - रक्ष रक्ष गणाध्यक्ष रक्ष त्रैलोक्य रक्षक ।
भक्तानामभयं कर्ता त्राता भव भवार्णवात् ॥
 - द्वैमातुर कृपासिन्धो षाण्मातुराग्रज प्रभो ।
वरदस्त्वं वरं देहि वाञ्छितं वाञ्छितार्थद ॥
 - अनेन सफलार्घ्येण वरदोऽस्तु सदा मम ।
 - गणेशाम्बिकाभ्यां नमः विशेषार्घ्यं समर्पयामि ।
- **प्रार्थना**

विघ्नेश्वराय वरदाय सुरप्रियाय, लम्बोदराय सकलाय जगद्धिताय ।
नागाननाय श्रुतियज्ञविभूषिताय, गौरीसुताय गणनाथ नमो नमस्ते ॥

 - त्वं वैष्णवी शक्तिरनन्तवीर्या, विश्वस्य बीजं परमासि माया ।
सम्मोहितं देवि समस्तमेतत्, त्वं वै प्रसन्ना भुवि मुक्तिहेतुः ॥
 - गणेशाम्बिकाभ्यां नमः । प्रार्थनापूर्वकं नमस्कारान् समर्पयामि ।
- **समर्पण**

अनया पूजया गणेशाम्बिके प्रीयेताम्, न मम ।

॥ कलश पूजनम् ॥

- **भूमि स्पर्श** ॐ भूरसि भूमिरस्यदितिरसि विश्वधाया विश्वस्य भुवनस्य धर्त्री ।
पृथिवीं यच्छ पृथिवीं दृ ७ ह पृथिवीं माहि ७ सीः ॥ भूमि का स्पर्श करें
- **धान्य प्रक्षेप** ॐ ओषधयः समवदन्त, सोमेन सह राजा ।
यस्मै कृणोति ब्राह्मणस्त ७ राजन् पारयामसि ॥ भूमि पर सप्तधान्य रखें
- **कलश स्थापयेत्** ॐ आजिघ्न कलशं मह्या त्वा विशन्तिवन्दवः पुनरुर्जा निवर्त्तस्व सा नः ।
सहस्रं ध्रुक्क्ष्वोरु धारा पयस्वती पुनर्म्मा विशताद्रयिः ॥ सप्तधान्य पर कलश रखें
- **कलशे जल पूरणम्** ॐ वरुणस्योत्तम्भन मसि वरुणस्य स्कम्भ सर्जनीस्थो वरुणस्य ऽक्रत
सदन्यसि वरुणस्य ऽक्रत सदनमसि वरुणस्य ऽक्रत सदन मासीद ॥
- **कलशे सोपारी प्रक्षेप** ॐ या फलिनीर्या अफला अपुष्पा याश्च पुष्पिणी ।
बृहस्पति प्रसूतास्ता नो मुञ्चन्त्व ७ हसः ॥ कलश में सोपारी रखें
- **कलशे हिरण्य प्रक्षेप** ॐ हिरण्यगर्भः समवर्त्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेक ऽआसीत ।
स दाधार पृथ्वीं द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम ॥ कलश में दक्षिणा छोड़ें
- **कलश में सूत्र लपेटे** ॐ सुजातो ज्योतिषा सह शर्म वरूथमा सदत्स्वः ।
वासो अग्ने विश्वरूप ७ संव्ययस्व विभावसो ॥ कलश में मौली लपेट दें
- **कलश पर नारीयल रखें** ॐ श्रीश्रुते लक्ष्मीश्च पत्न्यावहोरात्रे पार्श्वे नक्षत्राणि रूपमश्विनौ व्यात्तम् ।
इष्णन्निषाणामुम्मऽइषाण सर्वलोकम्मऽइषाण ॥ पूर्णपात्र पर नारियल रखें
- **कलश आवाहन** ॐ तत्त्वा यामि ब्रह्मणा वन्दमानस्तदा शास्ते यजमानो हविर्विर्भः ।
अहेडमानो वरुणेह बोध्युरुश ७ समा न आयुः प्रमोषीः ॥
 - कलशस्य मुखे विष्णुः कण्ठे रुद्र समाश्रिताः ।
मूले त्वस्य स्थितो ब्रह्मा मध्ये मातृ-गणाः स्मृताः ॥ ॥१॥
 - कुक्षौ तु सागरा सर्वे सप्तद्वीपा वसुंधरा ।
ऋग्वेदोथ यजुर्वेदः सामवेदो ह्यथर्वणः ॥ ॥२॥
 - अंगैश्च सहिता सर्वे कलशन्तु समाश्रिताः ।
अत्र गायत्री सावित्री शान्तिः पुष्टिकरी तथा ॥ ॥३॥

- आयान्तु देव पूजार्थं दुरितक्षय-कारकाः ।
- गंगे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति ।
नर्मदे सिन्धु-कावेरि जलेऽस्मिन् संनिधिं कुरु ॥ ॥४॥
- अस्मिन् कलशे वरुणं साङ्गं सपरिवारं सायुधं सशक्तिकमावाहयामि।
ॐ भूभुवः स्वः भो वरुण ! इहागच्छ, इहतिष्ठ, स्थापयामि, पूजयामि
मम पूजां गृहाण । ॐ अपां पतये वरुणाय नमः ।

● कलश चतुर्दिक्षु चतुर्वेदान्पूजयेत्

कलश के चारो तरफ कुंकुम एवं चावल लगा दें ।

- | | |
|---------------|--------------------------|
| १. पूर्व | ऋग्वेदाय नमः । |
| २. दक्षिण | यजुर्वेदाय नमः । |
| ३. पश्चिम | सामवेदाय नमः । |
| ४. उत्तर | अथर्ववेदाय नमः । |
| ५. कलश के ऊपर | ॐ अपाम्पतये वरुणाय नमः । |

- नीचे दिये हुए मंत्रों के द्वारा पंचोपचार या षोडशोपचार पूजन कर दें ।

● प्रार्थना :

- देव-दानव संवादे मथ्यमाने महोदधौ ।
उत्पन्नोऽसि तदा कुम्भ विधृतो विष्णुना स्वयम् ॥ ॥ १॥
- त्वत्तोये सर्व-तीर्थानि देवाः सर्वे त्वयि स्थिताः ।
त्वयि तिष्ठन्ति भूतानि त्वयि प्राणाः प्रतिष्ठिताः ॥ ॥ २॥
 - शिवः स्वयं त्वमेवासि विष्णुस्त्वं च प्रजापति ।
आदित्या वसवो रुद्रा विश्वेदेवाः सपैतृकाः ॥ ॥ ३॥
 - त्वयि तिष्ठन्ति सर्वेऽपि यतः काम-फल-प्रदाः ।
 - त्वत्प्रसादादिमां पूजां कर्तुमीहे जलोद्भव ।
सांनिध्यं कुरु मे देव प्रसन्नो भव सर्वदा ॥ ॥ ४॥
 - नमो नमस्ते स्फटिक-प्रभाय सुश्वेतहाराय सुमंगलाय ।
सुपाश-हस्ताय झषासनाय जलाधिनाथाय नमो नमस्ते ॥ ॥ ५॥
 - ॐ अपांपतये वरुणाय नमः ॥

● अर्पण

अनेन कृतेन पूजनेन कलशे वरुणाद्यावाहित देवताः प्रीयन्ताम् न मम ।

॥ सखी सह पार्वती एवं शिव पूजनम् ॥

- ध्यानम्
 - मंदारमाला कुलितालकायै, कपालमालांकित शेखराय ।
दिव्याम्बरायै च दिगम्बराय, नमः शिवायै च नमः शिवाय ॥
 - पीतकौशेयवसनां हेमाभां कमलासनाम् ।
भक्तानां वरदां नित्यं पार्वतीं चिन्तयाम्यहम् ॥
- आह्वानम्
 - ॐ सहस्रशीर्षा पुरुषः सहस्राक्षः सहस्रपात् ।
स भूमि ७ सर्व तस्पृत्वाऽत्यतिष्ठ दशाङ्गुलम् ॥
 - आंगच्छ देवि सर्वेशे सर्वदेवाश्च संस्तुते ।
अतस्त्वां पूजयिष्यामि प्रसन्ना भव पार्वति ॥ अक्षत अर्पण करें ।
 - श्री सखी सहित उमामहेश्वराभ्यां नमः । आवाहनार्थे अक्षतान समर्पयामि ॥
- आसनम्
 - ॐ पुरुषऽएवेदं ७ सर्व व्यद्भूतं यच्च भाव्यम् ।
उतामृ तत्वस्ये शानो यदन्नेना तिरोहति ॥
 - भवानि त्वं महादेवि सर्व-सौभाग्य दायिके ।
अनेक-रत्न-संयुक्त मासनं प्रतिगृह्यताम् ॥
 - शिवे शिवप्रिये देवि मंगले च जगन्मये ।
शिवे कल्याणदे देवि शिवरूपे नमोस्तु ते ॥ अक्षत अर्पण करें ।
 - श्री सखी सहित उमामहेश्वराभ्यां नमः । आसनार्थे अक्षतान समर्पयामि ॥
- पाद्यम्
 - ॐ एतावानस्य महिमातो ज्यायाँश्च पूरुषः ।
पादोऽस्य विश्वा भूतानि त्रिपादस्या मृतं दिवि ॥
 - सुचारु शीतलं दिव्यं नानागन्ध समन्वितम् ।
पाद्यं गृहाण देवेशि महादेवि नमोऽस्तु ते ॥
 - शिवरूपे नमस्तेस्तु शिवाय सततं नमः ।
शिवप्रीतियुता नित्यं पाद्यं मे प्रतिगृह्यताम् ॥ जल अर्पण करें ।
 - श्री सखी सहित उमामहेश्वराभ्यां नमः । पादयोः पाद्यं समर्पयामि ॥
- अर्घ्यम्
 - ॐ त्रिपादूर्ध्व उदैत्पुरुषः पादोऽस्येहा भवत्पुनः ।
ततो विष्वङ् व्यक्रा मत्सा शना नशनेऽभि ॥
 - श्री पार्वति महाभागे शंकरप्रियवादिनि ।
अर्घ्यं गृहाण कल्याणि भर्त्रा सह पतिव्रते ॥
 - संसार ताप विच्छेदं कुरु मे सिंहवाहिनि ।
सर्वकामप्रदे देवि अर्घ्यं मे प्रतिगृह्यताम् ॥ जल, गन्धाक्षतपुष्प अर्पण करें ।
 - श्री सखी सहित उमामहेश्वराभ्यां नमः । अर्घ्यं समर्पयामि ॥

- आचमनीयम्

ॐ ततो विराड जायत विराजोऽ अधि पूरुषः ।
स जातोऽ अत्य रिच्यत पश्चाद् भूमिमथो पुरः ॥

 - गंगाजलं समानीतं सुवर्णं कलशे स्थितम् ।
आजम्यतां महाभागे रुद्रेण सहितेऽनघे ॥
 - राज्य सौभाग्यदे देवि प्रसन्ना भव पार्वती ।
मन्त्रेणानेन देवि त्वं पूजितासि महेश्वरि ॥ जल अर्पण करें ।
 - श्री सखी सहित उमामहेश्वराभ्यां नमः । आचमनीयं समर्पयामि ॥
- स्नान

ॐ तस्माद्यज्ञात् सर्वं हुतः सम्भृतं पृषदाज्यम् ।
पशूंस्तान्श्चक्रे वायव्या नारण्या ग्राम्याश्च ये ॥

 - गंगा सरस्वती तीरे पयोष्णी नर्मदा जलैः ।
स्नापितोसि मया देव तथा शान्तिं कुरुष्व मे ॥ जल अर्पण करें ।
 - श्री सखी सहित उमामहेश्वराभ्यां नमः । स्नानं समर्पयामि ॥
- दुग्ध स्नानम्

ॐ पयः पृथिव्यां पय ओषधीषु पयो दिव्यन् तरिक्षे पयोधाः ।
पयस्वतीः प्रदिशः सन्तु मह्यम् ॥

 - कामधेनु समुद्धूतं दुग्धं चामृतमुत्तमम् ।
स्नानार्थं च मयाऽनीतं गृहाण परमेश्वरि ॥ दूध से स्नान करायें ।
- दधि स्नानम्

ॐ दधि क्राव्णो अकारिषं जिष्णोरश्वस्य वाजिनः ।
सुरभि नो मुखा करत् प्रण आयु ७ षि तारिषत् ॥

 - गोदुग्धं विकृतं देवि दधिरुपं गुणान्वितम् ।
स्नानार्थं च मया दत्तं स्वीकुरु त्वं जगत्प्रिये ॥ दधि से स्नान करायें ।
- घृत स्नानम्

ॐ घृतं मिमिक्षे घृतमस्य योनिर्घृते श्रितो घृतम वस्य धाम ।
अनुष्वधमा वह मदयस्व स्वाहाकृतं वृषभ वक्षि हव्यम् ॥

 - गो घृतं च मयाऽनीतं देवानां हविरुत्तमम् ।
पावनं सर्वलोकानां गृहाण सुरसुन्दरि ॥ घी से स्नान करायें ।
- मधु स्नानम्

ॐ मधु वाता ऋतायते मधु क्षरन्ति सिन्धवः ।
माद्धवीर्नः सन्त्वोषधीः । मधु नक्त मुतो षसो मधुमत् पार्थिव ७ रजः ।
मधु द्यौरस्तुनः पिता । मधुमान्नो व्वनस्पतिर् मधुमाँ२ अस्तु सूर्यः ।
माध्वीर्गावो भवन्तु नः ॥

 - पुष्पेभ्यः सारमादाय मक्षिकाभिः कृतं मधु ।
स्नानार्थं च मया दत्तं गृहाण सुरपूजिते ॥ मधु से स्नान करायें ।

- शर्करा स्नानम्

ॐ अपा ७ रसमुद् वयस ७ सूर्ये सन्तः ७ समाहितम् ।
 अपा ७ रसस्य यो रसस्तम् वो गृह्णाम्युत्तम मुपयाम गृहीतो सिन्द्राय
 त्वा जुष्टं गृह्णाम्येष ते योनि रिन्द्राय त्वा जुष्टतमम् ॥

 - शर्करा च सिता श्रेष्ठा इक्षुसार समुद्भवा ।
 स्नानार्थं च मया दत्ता गृहाण परमेश्वरि ॥ सक्कर चढाये
- पंचामृत स्नानम्

ॐ पंच नद्यः सरस्वती मपि यान्ति सस्रोतसः ।
 सरस्वती तु पंचधा सो देशे भवत्सरित ॥

 - पयो दधि घृतं चैव मधु च शर्करान्वितम् ।
 पंचामृतं मयानीतं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥ पंचामृत से स्नान करायें
 - श्री सखी सहित उमामहेश्वराभ्यां नमः । पंचामृत स्नानं समर्पयामि ॥
- गन्धोदक स्नानम्

ॐ अ ७ शुनाते अ ७ शुः पृच्यतां परुषा परुः ।
 गन्धस्ते सोममवतु मदाय रसो अच्युतः ॥

 - त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पूष्टि वर्द्धनम् ।
 उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ॥ इत्र चढाये
 - श्री सखी सहित उमामहेश्वराभ्यां नमः । गंधोदक स्नानं समर्पयामि ॥
- शुद्धोदक स्नानम्

ॐ शुद्धवालः सर्वशुद्धवालो मणिवालस्यऽ अश्विनाः ।
 श्वेतः श्वेताक्षो रुणस्ते रुद्राय पशुपतये कर्णायामा
 अवलिप्ता रौद्रा नभोरूपाः पार्जन्याः ॥

 - ॐ मन्दाकिन्यास्तु यद्वारि सर्वपापहरं शुभम् ।
 तदिदं कल्पितं देव ! स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥ जल से स्नान करायें ।
 - श्री सखी सहित उमामहेश्वराभ्यां नमः । शुद्धोदक स्नानं समर्पयामि ॥
- अभिषेक स्नानम्

देवताओं का पुरुषुक्त, श्रीसुक्त, महिम्नः पारन्ते०, या अन्य मंत्रो द्वारा
 अभिषेक कर सकते हैं ।
- वस्त्रम्

ॐ तस्माद्यज्ञात् सर्वहुतऽ ऋचः सामानि जज्ञिरे ।
 छन्दा ७ सि जज्ञिरे तस्माद्य जुस्तस्माद जायत ॥

 - वस्त्रयुग्मं गृहाणेदं देवि देवस्य वल्लभे ।
 सर्व सिद्धिप्रदे देवि मंगलं कुरु मे सदा ॥ वस्त्र चढायें ।
 - श्री सखी सहित उमामहेश्वराभ्यां नमः । वस्त्रम् समर्पयामि ॥

- उपवस्त्रम्

ॐ सुजातो ज्योतिषा सह शर्म वरूथमासदत्स्वः ।
वासोग्ने विश्वरूप ७ संव्ययस्व विभावसो ॥

 - पीततन्तुयुतां दिव्यां रक्तकौशेय सम्भवाम् ।
मुचन्मुक्तावली युक्तां कंचुकीं प्रतिगृह्यताम् ॥ उपवस्त्र चढायें ।
- यज्ञोपवितम्

ॐ यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं, प्रजापतेर्यत्सहजं पुरस्तात् ।
आयुष्यमग्र्यं प्रतिमुञ्च शुभ्रं, यज्ञोपवीतं बलमस्तु तेजः ॥

 - उमाकान्त नमस्तुभ्यं रक्ष मां भवसागरात् ।
उपवीतं सोत्तरीयं गृहाण जगदीश्वर ॥ यज्ञोपवित चढायें ।
- चंदनम्

ॐ श्रीखण्डं चन्दनं दिव्यं गन्धाढ्यं सुमनोहरम् ।
विलेपनं सुरश्रेष्ठ चन्दनं प्रतिगृह्यन्ताम् ॥

 - कुंकुमागरु कर्पूर कस्तुरी रोचनायुतम् ।
विलेपनं महादेवि गन्धं दास्यामि भक्तितः ॥
 - चन्दनेन सुगन्धेन कर्पूरागुरु कुंकुमैः ।
लेपयेत् सर्वगात्राणि प्रीयतां च हरप्रिये ॥ चन्दन चढायें ।
 - श्री सखी सहित उमामहेश्वराभ्यां नमः । चंदनम् समर्पयामि ॥
- अक्षतम्

ॐ अक्क्षन्न मीमदन्त ह्यवप्प्रियाऽअधुषत ।
अस्तोषत स्वभानवो विप्रा नविष्ठया मती योजान् नविन्द्रतेहरी ॥

 - रंजिताः कुंकुमाद्येन अक्षताश्चाति शोभनाः ।
भक्त्या समर्पितास्तुभ्यं प्रसन्ना भव पार्वति ॥
 - रंचिते कुंकुमेनैव अक्षतैश्च सुशोभनैः ।
पूजये द्विधिना देवि सुप्रसन्ना च पार्वतीम् ॥ चावल चढायें ।
 - श्री सखी सहित उमामहेश्वराभ्यां नमः । सकल पूजार्थं अक्षतान् समर्पयामि ॥
- सुगन्ध तैलं - इत्र

ॐ त्रयम्बकं यजामहे सुगन्धिम् पुष्टि वर्द्धनम् ।
उर्वारुक मिव बन्धनान मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ॥

 - अभ्यंगार्थं मयाऽनीतं तैलं पुष्पादिवासितम् ।
प्रयत्नेनार्जितम् शुद्धं गृहाण परमेश्वरि ॥
 - ॐ चम्पकाशोकवकुल मालती मोगरा दिभिः ।
वासितं स्निग्धताहेतु तैलं चारु प्रगृह्यतां ॥ इत्र चढायें ।
 - श्री सखी सहित उमामहेश्वराभ्यां नमः । सुगन्धि तैलम् समर्पयामि ॥

- आभूषण

ॐ युवं तमिन्द्रा पर्वता पुरोयुधा यो नः एतन्यादप तन्तमिद्धतं वज्रेण तन्तमिद्धतम् । दूरे चत्ताय छन्त्सद् गहनं यदिनक्षत् ॥

 - ॐ सौभाग्य सूत्रम् वरदे सुवर्ण मणि संयुतम् ।
कण्ठे बध्नामि देवेशि सौभाग्यम् देहि मे सदा ॥ आभूषण चढायें ।
 - श्री सखी सहित उमामहेश्वराभ्यां नमः । आभूषणम् समर्पयामि ॥
- काजल

ॐ चक्षुर्भ्याम् कज्जलम् रम्यम् सुभगे शान्ति कारकम् ।
कर्पूज्योति समुत्पन्नम् गृहाण परमेश्वरि ॥ काजल चढायें ।

 - श्री सखी सहित उमामहेश्वराभ्यां नमः । काजलम् समर्पयामि ॥
- पुष्प / पुष्पमालाम्

माल्यादीनि सुगन्धीनि मालत्यादीनि वै प्रभो ।
मया हृतानि पुष्पाणि गृहाण परमेश्वरी ॥ पुष्प चढायें ।

 - श्री सखी सहित उमामहेश्वराभ्यां नमः । गंधाक्षतपुष्पं समर्पयामि ॥
- दुर्वाम्

ॐ काण्डात काण्डात प्ररोहन्ती परुषः परुषस्परि ।
एवा नो दूर्वे प्रतनु सहस्रेण शतेन च ॥ दुर्वा चढायें ।
- बिल्वपत्रम्

ॐ नमो बिल्मिने च कवचिने च नमो वर्मिणे च वरूथिने च
नमः श्रुताय च श्रुतसेनाय च नमो दुन्दुभ्यरय चाहनन्यायच ।

 - ॐ त्रिदलं त्रिगुणाकारं त्रिनेत्रं च त्रिधायुधम् ।
त्रिजन्मपाप संहारमेक बिल्वं शिवार्पणम् ॥ बेलपत्र चढायें ।
 - श्री सखी सहित उमामहेश्वराभ्यां नमः । बिल्वपत्रम् समर्पयामि ॥
- सौभाग्य द्रव्यम्

ॐ अहिरिव भोगैः पर्येति बाहुन् ज्यावा हेतिम् परिबाधमानः ।
हस्तघ्नो विश्वा वयुनानि विद्वान् पुमान् पुमा ७ सं परिपातु विश्वतः ॥

 - अबीरं च गुलालं च चोवा चन्दन मेव च ।
अबीरेणर्चितो देव अतः शान्ति प्रयच्छमे ॥ अबीर-गुलाल चढायें ।
 - श्री सखी सहित उमामहेश्वराभ्यां नमः । सौभाग्य द्रव्याणि समर्पयामि ॥
- हरिद्राचूर्ण

ॐ हरिद्रा रंचिते देवि ! सुख सौभाग्य दायिनी ।
तस्मात् त्वाम पूज्याम् यत्र सुखम् शान्तिम् प्रयच्छ मे ॥

 - श्री सखी सहित उमामहेश्वराभ्यां नमः । हरिद्रा समर्पयामि ॥
- कुंकुमम्

ॐ कुंकुमं कामना दिव्यं कामना काम सम्भवम् ।
कुंकुमेनार्चितो देव गृहाण परमेश्वर ॥ कुंकुम चढायें ।

 - श्री सखी सहित उमामहेश्वराभ्यां नमः । कुंकुमं समर्पयामि ॥

● सिन्दूरम्

ॐ सिन्दूरं शोभनं रक्तं सौभाग्यं सुखवर्धनम् ।

शुभदं कामदं चैव सिन्दूरं प्रतिगृह्यताम् ॥

सिन्दूर चढायें ।

- श्री सखी सहित उमामहेश्वराभ्यां नमः । सिन्दूरम् समर्पयामि ॥

● अथाङ्गपूजा

- | | | | |
|----------------------------|-------------------|---------------------------|---------------------|
| 1. ॐ उमायै नमः । | पादौ पूजयामि । | 9. ॐ लोकवन्द्यायै नमः । | स्तनौ पूजयामि । |
| 2. ॐ गौर्यै नमः । | जले पूजयामि । | 10. ॐ काल्यै नमः । | कण्ठं पूजयामि । |
| 3. ॐ पार्वत्यै नमः । | जानुनीं पूजयामि । | 11. ॐ शिवायै नमः । | मुखं पूजयामि । |
| 4. ॐ जगद्धात्र्यै नमः । | ऊरून् पूजयामि । | 12. ॐ भवान्यै नमः । | नेत्रे पूजयामि । |
| 5. ॐ जगत्प्रतिष्ठायै नमः । | कटिं पूजयामि । | 13. ॐ रुद्राण्यै नमः । | कर्णौ पूजयामि । |
| 6. ॐ शक्तिदायै नमः । | जंघे पूजयामि । | 14. ॐ शर्वाण्यै नमः । | ललाटं पूजयामि । |
| 7. ॐ शान्तिरूपिण्यै नमः । | नाभिं पूजयामि । | 15. ॐ मंगलदात्र्यै नमः । | शिरः पूजयामि । |
| 8. ॐ देव्यै नमः । | उदरं पूजयामि । | 16. ॐ पुत्रदायिन्यै नमः । | सर्वाङ्गं पूजयामि । |

● पत्र पूजा

- | | | | |
|---------------------|--------------------------|-----------------------|-----------------------------|
| 1. अशोकायै नमः | अशोक पत्रं समर्पयामि । | 6. पार्वत्यै नमः | ब्राह्मी पत्रं समर्पयामि । |
| 2. जगद्धात्र्यै नमः | धात्री पत्रं समर्पयामि । | 7. धूर्जटायै नमः | धतूर पत्रं समर्पयामि । |
| 3. माहेश्वर्यै नमः | दूर्वापत्रं समर्पयामि । | 8. त्रिपुरांतकायै नमः | अपामार्ग पत्रं समर्पयामि । |
| 4. कपर्दिने | करवीर पत्रं समर्पयामि । | 9. सर्वेश्वर्यै नमः | नानाविध पत्राणि समर्पयामि । |
| 5. कपालधारिण्यै नमः | कदंब पत्रं समर्पयामि । | | |

● पुष्प पूजा

- | | | | |
|-------------------------|-------------------------|---------------------------|---------------------------|
| 1. चतुर्वर्गप्रदायै नमः | चंपकपुष्पं समर्पयामि । | 6. शांभव्यै नमः | शतपत्रपुष्पं समर्पयामि । |
| 2. बुद्धि प्रियायै नमः | केतकीपुष्पं समर्पयामि । | 7. चामुंडायै नमः | पद्मपुष्पं समर्पयामि । |
| 3. कौमार्य नमः | करवीरपुष्पं समर्पयामि । | 8. जगदाच्य नमः | जपापुष्पं समर्पयामि । |
| 4. कुमार्य नमः | पकुलपुष्पं समर्पयामि । | 9. माहेश्वर्यै नमः | मल्लिकापुष्पं समर्पयामि । |
| 5. धनदायै नमः | धत्तरपुष्पं समर्पयामि । | 10. मेरुमंदारवासिन्यै नमः | अशोकपुष्पं समर्पयामि । |

● नाम पूजा

- | | | |
|----------------------|-----------------------|---------------------------|
| 1. उमायै नमः । | 11. पार्वत्यै नमः । | 21. आर्यायै नमः । |
| 2. कात्यायन्यै नमः । | 12. दुर्गायै नमः । | 22. दाक्षायण्यै नमः । |
| 3. गौर्यै नमः । | 13. मृडायै नमः । | 23. गिरिजायै नमः । |
| 4. काल्यै नमः । | 14. चामुंडायै नमः । | 24. मेनकात्मजायै नमः । |
| 5. हिमवत्यै नमः । | 15. कौवेर्यै नमः । | 25. पद्मिन्यै नमः । |
| 6. शिवायै नमः । | 16. भगवत्यै नमः । | 26. पद्माकरवासिन्यै नमः । |
| 7. भवान्यै नमः । | 17. सरस्वत्यै नमः । | 27. महिषमर्दिन्यै नमः । |
| 8. रुद्रायै नमः । | 18. शारदायै नमः । | 28. सिंहवाहिन्यै नमः । |
| 9. सर्वमंगलायै नमः । | 19. वागीश्वर्यै नमः । | 29. शक्तिदायै नमः । |
| 10. अपर्णायै नमः । | 20. चंडिकायै नमः । | 30. ललितायै नमः । |

● विल्वपत्र

शिवअष्टोत्तर शत नामभिर्बिल्वदलैः समर्चयेत् ।

- श्री सखी सहित उमामहेश्वराभ्यां नमः । विल्वपत्रम् समर्पयामि ॥

● धूपम्

ॐ धूरसि धूर्व धूर्वन्तं धूर्व तं योऽस्मान् धूर्वति तं धूर्व यं व्वयं धूर्वामः ।
देवानामसि वह्नितमं ७ सस्नितमं पप्रितमं जुष्टतमं देवहूतमम् ॥

- देवद्रुमरसोद्भूतः कृष्णगरु समन्वितः ।
आनीतोऽयं मया धूपो भवानि प्रतिगृह्यताम् ॥
- चन्दनागरु कस्तूरी कुंकुमाद्या मनोहराः ।
भक्त्या दत्ता मया देवि धूपोयं प्रतिगृह्यताम् ॥ धूप दिखार्ये ।
- श्री सखी सहित उमामहेश्वराभ्यां नमः । धूपम् समर्पयामि ॥

● दीपम्

ॐ अग्निर्ज्योतिः ज्योतिरग्निः स्वाहा सूर्यो ज्योतिर्ज्योतिः सूर्यः स्वाहा ।
अग्निर्वर्चो ज्योतिर्वर्चः स्वाहा सूर्योर्वर्चो ज्योतिर्वर्चः स्वाहा ।
ज्योतिः सूर्यः सूर्योर्ज्योतिः स्वाहा ॥

- त्वं ज्योतिः सर्व देवानां तेजसां तेज उत्तमम् ।
आत्मज्योतिः परं धाम दीपोयं प्रतिगृह्यताम् ॥ दीप दिखार्ये ।
- श्री सखी सहित उमामहेश्वराभ्यां नमः । दीपम् समर्पयामि ॥

● नैवद्यम्

ॐ नाभ्या आसीदन्तरिक्ष ७ शीर्ष्णो द्यौः समवर्तत ।
पद्भ्यां भूमिर्दिशः श्रोत्रात्तथा लोकाँर अकल्पयन् ॥

- नैवेद्यं गृह्यतां देवि भक्तिं मे निश्चलां कुरु ।
ईप्सितं च वरं देहि परत्र च परां गतिम् ॥ प्रसाद चढायें ।
प्राणाय स्वाहा, अपानाय स्वाहा, व्यानाय स्वाहा,
उदानाय स्वाहा, समानाय स्वाहा ॥
- श्री सखी सहित उमामहेश्वराभ्यां नमः । नैवेद्यार्थं नैवेद्यं समर्पयामि ॥
- ऋतुफलम्
 - ॐ याः फलिनीर्या अफला अपुष्पा याश्च पुष्पिणीः।
बृहस्पतिप्रसूतास्ता नो मुञ्चन्त्व ७ ह सः ॥
 - इदं फलं मया देवि स्थापितम् पुरतस्तव ।
येन मे सफलं कर्म भवेत जन्मनि जन्मनि ॥ फल चढायें ।
 - श्री सखी सहित उमामहेश्वराभ्यां नमः । ऋतु फलम् समर्पयामि ॥
- ताम्बूलम्
 - ॐ यत्पुरुषेण हविषा देवा यज्ञमतन्वत ।
वसन्तोऽस्यासीदाज्यं ग्रीष्म इध्मः शरद्धविः ॥
 - ॐ पूगीफलं महद्दिव्यं नागवल्ली दलैर्युतम् ।
एलादिचूर्णं संयुक्तं ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम् ॥ पान-सुपारी चढायें ।
 - श्री सखी सहित उमामहेश्वराभ्यां नमः । ताम्बूलम् समर्पयामि ॥
- दक्षिणा
 - ॐ हिरण्यगर्भः समवर्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेक आसीत् ।
स दाधार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम् ॥
 - हिरण्यगर्भ गर्भस्थं हेमबीजं विभावसोः।
अनन्त पुण्य फलद मत्तः शान्तिं प्रयच्छ मे ॥ दक्षिणा चढायें ।
 - श्री सखी सहित उमामहेश्वराभ्यां नमः । सुवर्ण पुष्प दक्षिणां समर्पयामि ॥
- कपूर आरती
 - ॐ आ रात्रि पार्थिव ७ रजः पितुरप्रायि धामभिः ।
दिवः सदा ७ सि बृहती वितिष्ठस आत्वेषं वर्तते तमः ॥
 - इदं ७ हविः प्रजननम्मे अस्तु दशवीर ७ सर्वगण ७ स्वस्तये ।
आत्मसनि प्रजासनि पशुसनि लोक सन्य भयसनिः ।
अग्निः प्रजां बहुलं मे करोत्वन्नं पयो रेतोऽ अस्मासु धत्त ॥
 - अग्निर्देवता वातो देवता, सूर्यो देवता चन्द्रमा देवता,
वसवो देवता रुद्रा देवता, दित्या देवता मरुतो देवता,
विश्वे देवा देवता बृहस्पतिर्देवतेन्द्रो देवता वरुणो देवता ॥
 - कर्पूरगौरं करुणावतारं संसारसारं भुजगेन्द्रहारम् ।
सदा बसन्तं हृदया रबिन्दे भवं भवानी सहितं नमामि ॥

- प्रार्थना सौभाग्यं चाप्यवैधव्यं पुत्र-पौत्रादिकं सुखम् ।
बहुपुण्यफलं सर्वमतः शान्तिं च देहि मे ॥
 - मन्त्रहीनं क्रियाहीनं भक्तिहीनं यदीश्वरी ।
पूजितासि महादेवि सम्पूर्णं च वदस्व मे ॥
 - नमो देव्यै महादेव्यै शिवायै सततं नमः ।
नमः प्रकृत्यै भद्रायै नियताः प्रणताः स्मताम् ॥
- प्रदक्षिणा यानि कानि च पापानि जन्मान्तर कृतानि च ।
तानि तानि विनश्यन्ति प्रदक्षिण पदे पदे ॥
 - श्री सखी सहित उमामहेश्वराभ्यां नमः । प्रदक्षिणां समर्पयामि ॥
- अर्पणम् अनेन मया कृतेन पूजनेन श्री उमा महेश्वरौ प्रीयेताम् नमम् ।

॥ हरितालिका तीज व्रत कथा (लिंग-पूराण) ॥

पार्वती जी कहती हैं - हे महेश्वर हमें कोई गुप्त व्रत या पूजन बताइये। जो सब धर्मों से सरल हो, जिसमें परिश्रम भी कम करना पड़े, लेकिन फल अधिक मिले। यदि आप मुझ पर प्रसन्न हों तो यह विधान बताइये।

शिवजी बोले - हे देवि सुनो मैं तुमको एक व्रत तुम्हारे प्रेम के वशीभूत होकर मैं तुम्हें बतलाता हूँ। जैसे नक्षत्रों में चन्द्रमा, ग्रहों में सूर्य, वर्णों में ब्राह्मण, देवताओं में विष्णु, नदियों में गंगा, पुराणों में महाभारत, वेदों में सामवेद और इन्द्रियों में मन श्रेष्ठ है। उसी प्रकार मैं तुम्हें एक प्राचीन व्रत बतलाता हूँ, एकाग्र मन से सुनो। जिस व्रत के प्रभाव से तुमने मेरा आधा आसन प्राप्त किया है। भाद्रपद मास में हस्त नक्षत्र से युक्त शुक्ल पक्ष की तृतीया तिथि को उसका अनुष्ठान मात्र करने से स्त्रियाँ सब पापों से मुक्त हो जाती हैं। हे देवि तुमने आज से बहुत दिनों पहले हिमालय पर्वत पर इस व्रत को किया था, यह वृत्तान्त मैं तुमसे कहूँगा।

पार्वती जी ने पूछा - हे नाथ! मैंने क्यों यह व्रत किया था, यह सब आपके मुख से सुनना चाहती हूँ।

शिवजी ने कहा - भारत वर्ष के उत्तर की ओर एक बड़ा रमणीक और पर्वतों में श्रेष्ठ हिमवान् नामक पर्वत है। हे पार्वती तुमने बाल्यकाल में उसी पर्वत पर तपस्या की थी। बारह वर्ष तक तुम उलटी टँगकर केवल धुआँ पीकर रही, चौंसठ वर्ष तक सूखे पत्ते खाकर रही। माघ मास में जल में बैठी रहती और वैशाख की दुपहरिया में पंचाग्नि तापती थी। श्रावण के महीने में जल बरसता तो तुम भूखी-प्यासी रह कर मैदान में बैठी रहती थी। तुम्हारे पिता इस तरह के कष्ट सहन को देख कर बड़े दुःखी हुए। व चिन्ता में पड़ गये कि मैं अपनी कन्या किसको दूँ, उसी समय नारदजी वहाँ आ पहुँचे।

नारद जी ने कहा - हे पर्वतराज ! सुनो, मैं भगवान् विष्णु का भेजा हुआ आपके पास आया हूँ। आपको चाहिए कि यह कन्यारत्न किसी योग्य वर को दें। भगवान् विष्णु के समान योग्य वर ब्रह्मा, इन्द्र और शिव इनमें से कोई नहीं है। इसलिये मैं हथी कहूँगा कि आप अपनी कन्या भगवान् विष्णु को ही देवें।

हिमवान ने कहा - भगवान् विष्णु स्वयं मेरी कन्या ले रहे हैं और आप यह सन्देश लेकर आये हैं, तो मैं उन्हें अपनी कन्या दूँगा। हिमवान की इतनी बात सुन कर नारद आकाश में विलीन हो गये। नारद जी भगवान् विष्णु के पास पहुँच कर कहा - हे देव ! सुनिये, मैंने अपना विवाह पक्का करा दिया। उधर हिमवान ने पार्वती के पास जाकर कहा कि हे पुत्री ! मैंने तुम्हें भगवान् विष्णु को दे डाली। तब पिता की बात सुनकर तुम बिना उत्तर दिये ही अपनी सखी के घर चली गयी। और जोर-जोर से विलाप करने लगीं। यह देखकर एक सखी ने पास आकर कहा देवी, तुम इतनी दुःखी क्यों हो। तुम्हारी जो कुछ इच्छा होगी मैं यथाशक्ति उसको पूरा करने की चेष्टा करूँगी।

पार्वती बोली - मैं एक मात्र शिवजी को अपना पति बनाना चाहती हूँ, मेरे इस विचार को पिता जी ने ठुकरा दिया है। मैं अपने शरीर को त्याग दूँगी। पार्वती की इस बात को सुन कर सखियों ने कहा

शरीर का त्याग न करें, चलो किसी दूर वन में चलें जहाँ पिता को पता न लगे। ऐसी सलाह कर तुम वैसे वन में जा पहुँची। उधर तुम्हारे पिता घर-घर तुम्हें खोजने लगे। और मन ही मन सोचने लगे की मैंने नारद जी से प्रतिज्ञा कर चुका हूँ अपनी पुत्री विष्णु को दूँगा। ऐसा सोचते सोचते मूर्च्छित हो गये। जब होश आया तो सब पूछने लगे कि क्या हुआ गिरिराज ! आप की मूर्च्छा का कारण क्या है।

हिमवान ने कहा - पता नहीं मेरी बेटी कहाँ है। इसके बाद हिमवान् तुम्हें वन-वन खोजने लगे। तुम भी अपनी सखियों के साथ उस भयानक वन में चलती चलती एक नदी के किनारे जा पहुँची, उसके रमणीय तट पर एक बड़ी सी कन्दरा थी। तुमने उसी कन्दरा में आश्रम बना लिया और मेरी एक बालुकामयी प्रतिमा बना कर अपनी सखियों के साथ निराहार रह कर मेरी आराधना करने लगी। भाद्रपद शुक्ल पक्ष की हस्त युक्त तृतीया के दिन रेत से शिवलिंग का निर्माण कर विधिवत् पूजन किया और भोलेनाथ की स्तुति में लीन होकर रात्रि जागरण किया। उस व्रतराज के प्रभाव से मेरा आसन डगमगा उठा। जिससे मैं तत्काल उस स्थान पर जा पहुँचा और मैंने तुमसे कहा मैं तुम पर प्रसन्न हूँ, बोलो क्या चाहती हो ?

तुमने कहा - मेरे देवता ! यदि आप मेरे ऊपर प्रसन्न हैं, तो मेरे पति बनें। मैंने तथास्तु कह कर कैलास पर्वत चला आया। तुमने वह प्रतिमा नदी में प्रवाहित कर दी। और सखियों के साथ उस महाव्रत का पारण किया। हिमवान भी तब तक उस वन में तुम्हें खोजते हुए आ पहुँचे। तुम्हें देखते ही उन्होंने तुम्हें छाती से लगा लिया और विलख कर रोने लगे। फिर पूछा पुत्री ! इस वन में क्यों आ पहुँची।

पार्वती ने उत्तर दिया - हे पिता जी, मैंने पहले ही अपने आप को शिवजी के हाथों सौंप दिया था, आपने मेरी बात टाल दी इससे मैं यहाँ चली आयी। हिमवान ने सान्त्वना दिया कि हे पुत्री ! मैं तुम्हारी इच्छा के विरुद्ध कुछ न करूँगा। तुम्हें अपने साथ घर ले आये और मेरे साथ तुम्हारा विवाह कर दिये। इसीसे तुमने मेरा अर्धासन पाया है।

कैसे पड़ा हरितालिका तीज नाम - हरितालिका दो शब्दों से बना है, हरित और तालिका. हरित का अर्थ है हरण करना और तालिका अर्थात् सखी। इस व्रत को हरितालिका इसलिए कहा जाता है, क्योंकि पार्वती की सखी (मित्र) उन्हें पिता के घर से हरण कर जंगल में ले गई थी।

हरितालिका के व्रत से जुड़ी कई मान्यता हैं, जिनमे इस व्रत के दौरान जो सोती हैं, वो अगले जन्म में अजगर बनती हैं, जो दूध पीती हैं, वो सर्पिणी बनती हैं, जो व्रत नहीं करती वो विधवा बनती हैं, जो शक्कर खाती हैं मक्खी बनती हैं, जो मांस खाती शेरनी बनती हैं, जो जल पीती हैं वो मछली बनती हैं, जो अन्न खाती हैं वो सुअरी बनती हैं जो फल खाती हैं वो बकरी बनती हैं। इस प्रकार के कई मत सुनने को मिलते हैं।

॥ शिव जी की आरती ॥

- जय शिव ओंकारा, हर शिव ओंकारा ।
ब्रम्हा विष्णु सदाशिव, अर्द्धांगी धारा ॥ ॥ १ ॥ ॐ जय शिव ओंकारा ।
- एकानन, चतुरानन, पंचानन राजे ।
हंसासन, गरुडासन, वृषवाहन साजे ॥ ॥ २ ॥ ॐ जय शिव ओंकारा ।
- दोय भुज चार चतुर्भुज, दस भुज अति सोहें ।
तीनों रूप निरखता, त्रिभुवन जन मोहें ॥ ॥ ३ ॥ ॐ जय शिव ओंकारा ।
- अक्षमाला, बनमाला, रुण्डमाला धारी ।
चंदन, मृदमग चन्दा, भाले शशिधारी ॥ ॥ ४ ॥ ॐ जय शिव ओंकारा ।
- श्वेताम्बर, पीताम्बर, बाघाम्बर अंगें ।
सनकादिक, ब्रम्हादिक, भूतादिक संगें ॥ ॥ ५ ॥ ॐ जय शिव ओंकारा ।
- कर मध्य कमण्डल, चक्र त्रिशूल धरता ।
जगकर्ता दुखहर्ता, जग पालन कर्ता ॥ ॥ ६ ॥ ॐ जय शिव ओंकारा ।
- ब्रम्हा विष्णु सदाशिव, जानत अविवेका ।
प्रणवाक्षर ॐ मध्ये, ये तीनों एका ॥ ॥ ७ ॥ ॐ जय शिव ओंकारा ।
- काशी में विश्वनाथ विराजत, नन्दो ब्रम्हचारी ।
नित उठि भोग लगावत, सेवत नर नारी ॥ ॥ ८ ॥ ॐ जय शिव ओंकारा ।
- त्रिगुण स्वामिजी की आरती, जो कोई नर गावें ।
कहत शिवानंद स्वामी, मनवांछित फल पावें ॥ ॥ ९ ॥ ॐ जय शिव ओंकारा ।
- जय शिव ओंकारा, स्वामी जय शिव ओंकारा ।
ब्रम्हा विष्णु सदाशिव, अर्द्धांगीधारा ॥ ॥ १० ॥ ॐ जय शिव ओंकारा ।

॥ पार्वती जी की आरती ॥

- जय पार्वती माता, जय पार्वती माता ।
ब्रह्मा सनातन देवी, शुभ फल की दाता ॥ ॥ १ ॥ जय पार्वती माता ... ।
- अलिकुल पद्म निवासिनि, निज सेवक त्राता ।
जग जीवन जगदम्बा, हरिहर गुण गाता ॥ ॥ २ ॥ जय पार्वती माता ... ।
- सिंह को वहान साजे, कुंडल है साथी ।
देव वधू जस गावत, नृत्य करत ता था ॥ ॥ ३ ॥ जय पार्वती माता ... ।
- सतयुग रूप शील अतिसुन्दर, नाम सती कहलाता ।
हेमाचल घर जन्मी, सखियाँ संग राता ॥ ॥ ४ ॥ जय पार्वती माता ... ।
- शुम्भ निशुम्भ विदारे, हेमाचल स्थाता ।
सहस्र भुजा तनु धरिके, चक्र लियो हाथा ॥ ॥ ५ ॥ जय पार्वती माता ... ।
- सृष्टि रूप तुही है जननी, शिव संग रंगराता ।
नन्दी भृंगी बीन लही, सारा जग मदमाता ॥ ॥ ६ ॥ जय पार्वती माता ... ।
- देवन अरज करत हम, चरण ध्यान लाता ।
तेरी कृपा रहे तो, मन नहीं भरमाता ॥ ॥ ७ ॥ जय पार्वती माता ... ।
- मैया जी की आरती, भक्ति भाव से जो नर गाता ।
नित्य सुखी रह करके, सुख संपत्ति पाता ॥ ॥ ८ ॥ जय पार्वती माता ... ।

● पुष्पांजलि

ॐ यज्ञेन यज्ञं मयजन्त देवा स्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन् ।
ते ह नाकं महिमानः सचन्त यत्र पूर्वे साध्याः सन्ति देवाः ॥

- ॐ राधाधिराजाय प्रसह्य साहिने । नमो वयं वैश्रणाय कुर्महे । समे कामान् कामकामाय मह्यम् । कामेश्वरो वैश्रवणो ददातु । कुबेराय वैश्रवणाय महाराजाय नमः ।
- ॐ स्वास्ति साम्राज्यं भोज्यं स्वराज्यं वैराज्यं पारमेष्ठ्यं राज्यं महाराज्यं माधिपत्यमयं समन्तपर्यायी स्यात् सार्वभौमः । सार्वायुष आन्तादा परार्थात् । पृथिव्यै समुद्र पर्यान्ताया एकराडिति तदप्येष श्लोकोऽभिगितो मरुतः परिवेष्टारो मरुतस्या वसन्नगृहे । आविक्षितस्य कामप्रेर्विश्वेदेवाः सभासद इतिः।
- ॐ विश्व तश्चक्षुरुत विश्वतो मुखो विश्वतो बाहुरुत विश्वतस्पात । सम्बाहूभ्यां धमति सम्पत्त्रैर्द्यावा भूमी जनयंदेव एकः ॥
- नानासुगन्धि पुष्पाणि यथा कालोद्भवानि च । पुष्पाञ्जलिर्मया दत्तं गृहाण परमेश्वर ॥

● प्रदक्षिणा

ॐ ये तीर्थानि प्रचरन्ति सृका हस्ता निषङ्गिणः ।
तेषां सहस्रं योजनेऽवधन्वा नितन्मसि ॥

- यानि कानि च पापानि जन्मान्तर कृतानि च । तानि सर्वाणि नश्यन्तु प्रदक्षिणं पदे पदे ॥
- पदे पदे या परिपूजकेभ्यः सद्यो श्वमेधादिफलं ददाति । तां सर्वं पापक्षय हेतुभूतां प्रदक्षिणां ते परितः करोमि ॥
- सप्तास्यासन परिधयस्त्रिः सप्त समिधः कृताः देवा यद्यज्ञं तन्वाना अवधन् पुरषं पशुम् ॥

● प्रणाम

त्वमेव माता च पिता त्वमेव, त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेव ।
त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव, त्वमेव सर्वं मम देव देव ॥

- कायेन वाचा मनसेन्द्रियैर्वा, बुद्ध्यात्मना वा प्रकृतिस्वभावात् । करोमि यद्यत् सकलं परस्मै, नारायणायेति समर्पयामि ॥
- पापोहं पाप कर्माहं पापात्मा पापसम्भवः । त्राहिमां पार्वती नाथ सर्वपापहरो भव ॥

● क्षमा प्रार्थना

मन्त्रहीनं क्रियाहीनं भक्तिहीनं सुरेश्वर ।

यत्पूजितं मया देव परिपूर्णं तदस्तु मे ॥

॥ १ ॥

■ आवाहनं न जानामि न जानामि विसर्जनम् ।

पूजां चैव न जानामि क्षम्यतां परमेश्वर ॥

॥ २ ॥

■ अपराध सहस्राणि क्रियन्तेऽहर्निशं मया ।

दासोऽयमिति मां मत्वा क्षमस्व परमेश्वरि ॥

॥ ३ ॥

■ रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ।

पुत्रान देहि धनं देहि सर्वान्कामांश्च देहि मे ॥

॥ ४ ॥

■ त्वयि भक्तिं च मे देहि भृशं भर्तारि शंकरे ।

संसारहारिणी बुद्धिं अन्ते देहि नमोस्तु ते ॥

॥ ५ ॥

■ ॐ विष्णवे नमः । ॐ विष्णवे नमः । ॐ विष्णवे नमः ।

● समर्पण

अनेन कृतेन पूजनेन भगवती श्री सखी सहित उमामहेश्वरौ प्रीयताम्, न मम ।

● वायनं संकल्प

अद्य पूर्वोचरित एवं० पुराणोक्त फल प्राप्त्यर्थं हरितालिका व्रतांगत्वेन पूजा सांगता सिद्ध्यर्थं ब्राह्मणाय सौभाग्य द्रव्य सहित वायन प्रदानं करिष्ये ॥
तदंगत्वेन ब्राह्मण पूजनं च करिष्ये ॥

● वायनदानमंत्रः

उपायनमिदं देव-व्रत-संमूर्ति-हेतवे ।

वायनं द्विजवर्याय सहिरण्यं ददाम्यहम् ॥

॥ १ ॥

■ अन्नं सुवर्ण-पात्रस्यं सवस्त्र-फल-दक्षिणम् ।

वायनं गौरि विप्राय ददामि प्रीतये तव ॥

॥ २ ॥

■ सौभाग्यारोग्यकामानां सर्वसंपत् समृद्धये ।

गौरी गिरीश-तुष्ट्यर्थं वायनं ते दाम्यहम् ॥

॥ ३ ॥

■ विप्राय वेदविदुषे श्रोत्रियाय कुटुंबिने ।

नरको-त्तारणार्थाय अच्युतः प्रीयतामिति ॥

॥ ४ ॥

● दक्षिणा

ॐ यथोक्त गुण विशिष्ट तिथ्यादौ अद्य अमुक गोत्रः, अमुक शर्मा, कृतस्य हरितालिका व्रतांग पूजा सांगता सिद्ध्यर्थं तत्सम्पूर्ण फल प्राप्त्यर्थं च अमुक कर्तृकेभ्यो नाना नाम गोत्रेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो मनसेप्सितां दक्षिणां विभज्य दातुमुत्सृज्ये ।

■ नमोऽस्त्वनन्ताय सहस्रमूर्तये सहस्र पादाक्षिशिरोरुवाहवे ।

■ सहस्रनाम्ने पुरुषाय शाश्वते सहस्र-कोटी युगधारिणे नमः ।

- उत्तर पूजन ॐ आवाहित देवताभ्यो नमः । उत्तर पूजां गृहणन्तु प्रीयन्ताम् ।
- विसर्जन ॐ यान्तु देव गणः सर्वे, पूजामादाय मामकीम् ।
इष्ट-काम-समृद्धयर्थं, पुनरागमनाय च ॥
■ ॐ गच्छ गच्छ सुरश्रेष्ठ स्वस्थाने परमेश्वर ।
यत्र ब्रम्हादयो देवाः तत्र गच्छ हुताशन ॥
- प्रार्थना प्रमादात् कुर्वतां कर्म प्रच्यवेता ध्वरेषु यत् ।
स्मरणादेव तद्विष्णोः सम्पूर्ण स्यादिति श्रुतिः ॥
■ यस्य स्मृत्या च नामोक्त्या तपो यज्ञ क्रियादिषु ।
न्यूनं सम्पूर्णतां याति सद्यो वन्दे तमच्युतम् ॥
■ देवि देवि उमे गौरि त्राहि मां करुणानिधे ।
ममापराधाः क्षन्तव्या भुक्ति-मुक्ति प्रदा भव ॥
- आशिर्वाद श्री वर्चस्व मायुष्य मारोग्यं गावधात् पवमानं महीयते ।
धन धान्यं पशुं बहुपुत्र लाभं शतसंवत्सरे दीर्घमायु ।
■ ॐ सफला सन्तु पूर्णा : सन्तु मनोरथा : ।
शत्रूणां बुद्धि नाशोस्तु मित्राणां मुदयस्तव ॥

॥ इति हरितालिका व्रत पूजन विधिः समाप्तः ॥

॥ हरितालिका व्रत उद्यापन विधिः ॥

❖ प्रथम दिन कृत्यम्

- स्नान साहित्यं गृहीत्वा तीर्थे गत्वा तत्र देहशुद्धि विधाय (प्रायश्चित्तनो प्रयोग)
- गृह-मागत्य तत्र पूर्व चतुरस्रं चतुर्द्वारं कदली स्तंभ मंडितं मंडपं कुर्यात् ।
- मंडप-मध्ये उक्त-विधिना चतुर्लिंगतोभद्र वा लिंगतोभद्रं पंचवर्णैः प्रपूर्य
- तत्पश्चिमे शुभासने उपविश्य आचम्य सुमुखश्चेत्यादि पठित्वा
- जलमादाय - अद्येत्यादि० तिथौ ममात्मनः समस्त-पाप-क्षय-पूर्वकं सप्त-जन्मसु सौभाग्यादि विविध भोग प्राप्तिद्वारा पुत्र-पौत्राद्यनवच्छिन्न-संतति-स्थिर-लक्ष्मी-कीर्तिलाभ शत्रु-पराजय द्वारा सदभीष्ट सिद्ध्यर्थम् उमा-महेश्वर प्रीत्यर्थं मया (मम भार्यया) आचरितस्य आचरि प्यमाणस्य हरितालिका व्रतस्य संपूर्ण फलावाप्त्यर्थमेक रात्राधिवासपक्षाश्रयेण हरितालिका व्रतोद्यापनं करिष्ये ॥
- तत्रादौ दिग्-रक्षणं, कलशाराधनं, गणपतिपूजनं, पुण्याहवाचनं, मातृकापूजनं, वसोर्धाराम्, आयुष्यमंत्रजपं, नान्दीश्रादम्, आचार्यादि ब्राह्मण-वरणं, सर्वतोभद्रमंडले ब्रह्मादि देवतानां तथा च लिंगतोभद्र मंडले लिंगतोभद्रमंडल देवतानां स्थापन प्रतिष्ठा पूजनं च करिष्ये ।
- इति संकल्प्य दिग्-रक्षणादि स्थापन पूजनं च पूर्वोक्तरीत्या कुर्यात् ।
- ततस्तन् मध्ये द्रोणपरिमितं व्रीहिराशिं कृत्वा तस्योपरि पूर्णपात्रान्तं कलशं निधाय तदुपरि क्षौमं वस्त्रं प्रसार्य चंदनेनाष्टदलं कृत्वा मंडकादि पीठ देवता आवाह्य गंधाद्युपचारैः संपूज्य ततो राजतं शिवं हैमीं गौरीं पुरतः राजतं वृषभं च कृताग्न्युत्तारण पूर्वक प्राण-प्रतिष्ठां कृत्वा कलशोपरि संस्थाप्य व्रत-विधिवत् आवाहयेत् ॥
- पीतकौशेयवसनां० ॥१॥ मंदार-माला कुलिता० ॥२॥ इति उमामहेश्वरौ आवाह्य
- महिम्नःस्तोत्रेण " रुद्राभिषेक पूर्वकं षोडशो पचारैः संपूज्य प्रार्थयेत् ॥
- नमः शिवाय सांगाय पंचवक्त्राय शूलिने । नंदि-भृंगि महाकाल गणयुक्ताय शंभवे ॥ ॥ १ ॥
- शिवाय हरकान्तायै प्रकृत्यै सृष्टिहेतवे । नमस्ते ब्रह्मरूपिण्यै जगद्धात्र्यै नमो नमः ॥ ॥ २ ॥
- येन कामेन देवि त्वं पजितासि महेश्वरि । संपूर्णं कुरु मे कामं सौभाग्यं च प्रयच्छ मे ॥ ॥ ३ ॥
- इति संप्रार्थ्य आचार्यादीन् संपूज्य दक्षिणादिकं दत्वा आशिषो गृहीत्वा सुवासिनीमपि संपूज्य कथा श्रवणादिना रात्रिं निनयेत् ॥ इति ॥

❖ द्वितीय दिन कृत्यम्

- प्रातः नित्यकर्म समाप्य आचम्य सुमुखश्चेत्यादि पठित्वा ।
- अद्येत्यादि० ममात्मनः हरितालिका व्रतोद्यापनस्य संपूर्ण फल प्राप्त्यर्थं ग्रहमख सहितं स्थापित देवतानांमुक्तद्रव्यैर्होमं करिष्ये ॥
- तत्रादौ दिग्-रक्षणादि प्रधान-देवता पूजनं च करिष्ये
- इति संकल्प्य दिग्-रक्षणादि प्रधान उमा-महेश्वर पूजनान्तं कर्म कृत्वा ।
- ततः समचतुरस्रमरत्निमात्रं होमानुसारेणाधिकं वा तत्र मृदा चतुरंगुलोत्सेधं स्थंडिलं विधाय अग्नि प्रणयनादिकं कृत्वा ॥
- जलं गृहीत्वा - प्रारब्धस्य कर्मणः साङ्गता सिद्ध्यर्थं ब्राह्मण द्वारा पञ्चभू संस्कार पूर्वक अग्निं प्रतिष्ठाप्य संपूज्य नवग्रहाणां स्थापन प्रतिष्ठा पूजनं कारयेत् (कुर्यात्) ।
- दक्षिणतो ब्रह्मासनादि कुशकंडिका कृत्वा ग्रहहोमान्तं कर्म कुर्यात् ॥
- प्रधान होमः – प्रधान उमा-महेश्वरं तिल-यव मिश्राज्येन् अष्टोत्तरशत संख्याकाभिः ॐ नमः शिवाय इति मंत्रेण हुत्वा गौर्यै नमः इति मंत्रेण तैरेव द्रव्यैर् अष्टोत्तरशतं जुहुयात् ।
- ततो ब्रह्मादि मंडल देवतानां, मंडूकादि परिवार (नंदिकेश्वराय नम इति विशेषः) देवतानां चैकैकामाज्याहुतिं जुहुयात् ॥
- ततो व्याहृतिहोमं समाप्य, फलहोमादिकं कृत्वा उत्तरपूजनमारभ्य प्रणीता विमोक्तान्तं कर्म कुर्यात् ॥
- ततो यथा समयम् उमा-महेश्वरं पंचोपचारैः संपूज्य महानीराजनं पुष्पांजलि स्तुतिपाठं च कृत्वा तिल-पात्रादि दानं दत्वा शक्तिश्चंद उमा-महेश्वर प्रतिमयो वस्त्रादिपदशय्यादानानि कार्याणि ।
- छायापात्रदानम् ।
- ततः षोडशाष्टौ वा द्विज युग्मानि संपूज्य भोजनोत्तरं तेभ्यः सौभाग्य वस्त्र दक्षिणा युतानि षोडश-वंश पात्राणि, षोडश-कुंभांश्च दद्यात् ।
- मंत्रः - सौभाग्यारोग्य कामानां सर्व-संपत्-समृद्धये । गौरी-गौरी शतुष्टयर्थं वायनं ते ददाम्यहम् ॥
- कृतस्य हरितालिका व्रतोद्यापनाख्यस्य कर्मणः सांगता सिद्ध्यर्थम् इमानि षोडश-वंश-पात्राणि, सौभाग्य-वस्त्र-सहितानि, षोडश-कुंभ सहितानि सदक्षिणानि नानागोत्रेभ्यो नानानामभ्यः सपत्नीकेभ्यो विभज्य विभज्य दास्ये ।
- तत आचार्यादीन् संपूज्य दक्षिणादिकं दत्वा आशिषो गृहीत्वा ।
- यान्तु देव० इति देवान् अग्निं च विसृज्य सुहृद्युक्तो भुंजीत ।

॥ इति हरितालिका व्रत उद्यापन विधिः ॥